प्रथम अध्याय
नीरज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय
नीरज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रास्ताविक :-

हिंदी साहित्य के इतिहास में कई कवि ऐसें हैं कि, जिन्होंने बुलंदियों को छुआ है, कई ऐसे भी हैं, जो बुलंदियों को छूना चाहते हैं; मगर गोपालदास सक्सेना 'नीरज' जी एक ऐसे कवि हैं जिन्हें बुलंदियाँ छूना चाहती हैं।

उनकी प्रतिभा के बारे में क्या कहें ? कविताओं में अगर निराशा का वर्णन करें तो आँखों से बरसात होने लगती है, जीवन का वास्तविक चित्रण करें, तो दिल की धडकन रूक जाती है और आशावादी रचना हो तो इन्सान आत्मविश्वास की कगार पर खड़ा हो जाता है। ऐसे महान कवि के जीवन परिचय को जान लेना आवश्यक हो जाता है।

जब ईश्वर अवतार लेते हैं, तब बादल गरजने लगते हैं, बिजलियाँ कडकने लगती हैं, तूफान आ जाता है, सारी पृथ्वी भयभीत हो जाती है और अचानक सारा वातावरण शांत हो जाता है। यह संकेत होता है कि, ईश्वर ने धरती पर अवतार ले लिया है। मगर नीरज जी के जन्म के समय ऐसा कुछ भी नहीं हुआ था। वातावरण हमेशा की तरह ही था; शायद उससे भी शांत रहा होगा, जो संकेत देता है कि, नीरज आम इन्सान हैं मगर उनके पास जो प्रतिभा है, वह दैवी है। अगर ऐसा न होता, तो सारी जनता के दिलों - दिमागपर छा जाना उनके लिए आसान कार्य नहीं था। आम इन्सान होने के कारण उनका जीवन दर्दभरी दास्तान बन गया। अपनों का छोडकर चले जाना, अपनों से दूर रहने की मजबूरी और अपनों द्वारा मिलनेवाली कड़वाहट भरी बातें यह सब आम आदमी के जीवन का चित्र है।

आम इन्सान होने के बावजूद दर्द को सहने की क्षमता, जीवन को जीने की अभिलाषा और दूसरोंपर मर - मिटने का हौसला सिर्फ महान व्यक्ति में पाया जाता है, जो कवि नीरज जी में था। जीवन में न जाने कितनी रूकावटें आयी, परेशानीयाँ आयी मगर नीरज जी जीवन का सफर तय करते ही गये, मुसिबतों से जुझते, कठिनाईयों को गले से लगाते आगे बढ़ते गये और संघर्षपूर्ण सफर को अन्जाम देते गये। इसी कारण उनका जीवन सभी के लिए एक प्रेरणा बन गया है। अगर हौसलें बुलंद हो तो कोई भी कार्य मुश्किल नहीं होता, यही बात नीरज जी ने सबके सामने रखी है। ऐसे आशावादी व्यक्ति के बारे पूर्ण जानकारी देना जरूरी बन जाता है। इसीकारण गोपालदास सक्सेना 'नीरज' जी का व्यक्तित्व और कृतित्व आपके सामने रखा जा रहा है। आशा है, आप उससे उचित लाभ प्राप्त करेंगे।

1.1 नीरज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1.1 जन्म :-

श्री. गोपालदास ब्रजकिशोर सक्सेना जी का उपनाम है 'नीरज'। इनका जन्म उत्तरप्रदेश के इटावा जिले के पुरावली नामक ग्राम में कायस्थ परिवार में हुआ। इनके जन्मस्थान के बारे में मतभेद नहीं है, परंतु इनकी जन्मतिथि के बारे में मतभेद हैं। पहले वर्ग में क्षेमचंद्र सुमन, डॉ. सुधा सक्सेना, डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र,

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

कंवर जगन्नाथ विश्व, विश्वम्भर मानव और डॉ. दुर्गा शंकर मिश्रजी आते हैं, जिनका मानना है कि, गोपालदास सक्सेना नीरज जी की जन्मतिथि 8 फरवरी 1926 है। दूसरे वर्ग में शिवाजी विष्णु निकम और श्री. हिंदुराव रामचंद्र घरपणकर आते हैं, जिनमें से शिवाजी निकम जी को स्वयं नीरज जी ने अपनी जन्मतिथि 4 फरवरी 1925 बतायी है। अब दोनों में से एक जन्मतिथि को गलत कहना पड़ेगा। नीरज जी को ज्योतिष विदया का ज्ञान था। उनका कहना है -

"सम्वत् 1981 के पौष मास की शुक्लपक्ष दशमी तदनुसार 4 जनवरी 1925 ई. को रविवार रात के 3 बजकर 15 मिनिटपर 'गोपालदास सक्सेना' नीरज का जन्म हुआ।" [1]

अपने जन्म के बारे में कवि का दृष्टिकाणे काफी निराश लगता है। क्योंकि उन्होंने अपनी ग़ज़ल में कुछ इसप्रकार लिखा है कि -

"बुझ जाए सरेशाम ही जैसे कोई जिराग़
कुछ यूँ' है शुरूआत मेरी दास्तान की।" [2]

उनका जीवन काफी संघर्षमय रहा है। अतः यह विचार उसी की देन हैं। उनकी जन्मतिथी के बारे में सूक्ष्म जानकारी हेतू जन्म कुंडली देना आवश्यक है। शिवाजी - निकम जी द्वारा दी गई जन्म कुंडली इसप्रकार है-
"श्री. 'नीरज' जी की जन्म कुंडली

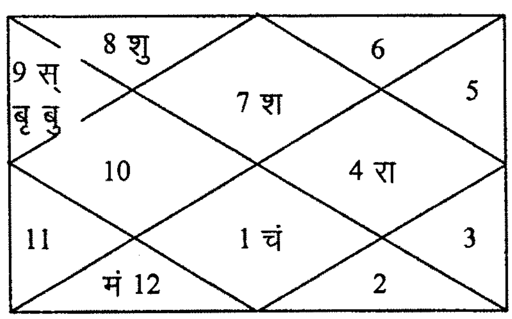

जन्म तारीख - 4 जनवरी 1925
जन्म स्थान - ग्राम पुरावली, इटावा जिला, उत्तर प्रदेश,
जन्म समय - रात के 3 बजकर 15 मिनिट
जन्म नक्षत्र - चतुर्थ चरण
पक्ष - शुक्ल पक्ष, 14 दिसम्बर से 14 जनवरी तक सूर्य धनु राशी में रहता है,
संवत - 1981 शके 1846
मास - पौष मास, शुक्ल पक्ष दशमी" [3]

अतः मेरा भी मानना यह है कि, गोपालदास सक्सेना 'नीरज' की जन्मतिथि 4 जनवरी 1925 ही है। और मै शिवाजी विष्णु निकम और श्री. हिंदुराव रामचंद्र घरपणकर के मत से सहमत हूँ।

अपना जन्मस्थान या अपना अस्तित्व बताते हुए कवि ने एक ग़ज़ल में लिखा है कि -

"जो गीत बाँटता फिरता था सारी दुनिया में
किसे पता है वो किन आँसुओं के घर में रहा।" [4]

1.1.2 घर - परिवार :-

घर के सदस्य देखने के पश्चात यही कहना पड़ेगा कि कवि का परिवार अधिक बड़ा न था। पिता ब्रजकिशोर सक्सेना, माता, बड़े भाई कृष्णदास, छोटे भाई नारायणदास और दामोदरदास तथा स्वयं गोपालदास सक्सेना 'नीरज' जी। परिवार में कुल मिलाकर छह सदस्य थें। कवि नीरज जी छह साल के थे, जब उनके पिता की मृत्यु हुई। ब्रजकिशोर सक्सेना गोपालदास से बहुत प्रेम करते थे। अतः उनकी कमी को कोई भी पूरा न कर सका।

"वो दिन जो ज़िन्दगी के गुज़ारे तेरे बग़ैर
कुछ अश्क बन गये तो कुछ गीतों में ढल गये।" [5]

इन पंक्तियों से हम जान सकते हैं कि पिता के प्रति कवि की भावनाएँ किस प्रकार व्याकूल हैं। उन्होंने और एक ग़ज़ल में कहा है कि -

"रंग ऋतु के बदल गये होंगे
वो जिधर से निकल गये होंगे।
तुमसे होकर जुदा सभी आँसू
गीतों - ग़ज़लों में ढल गये होंगे।" [6]

अपना प्रेम, अपनी भावणाएँ प्रकट करने का एक प्रबल माध्यम ग़ज़ल है - यह नीरज जी का मत इस उदाहरण से सही जान पड़ता है। पिता के पश्चात घर की सारी जिम्मेदारी गोपालदास पर आ गई। इस कारण उन्हें अपने परिवार से दूर रहकर पढ़ाई पूरी करनी पड़ी और नौकरी कर के घर की जिम्मेदारी अपने सर लेनी पड़ी। हर वक़्त उन्हें माँ की याद आती थी। और आँखे नम हो जाती थी।

"साँस के बोझ से जब रूह तड़प उठती है
वो तेरा प्यार है जो दिल को हवा देता है।" [7]

माँ के प्रेम से वंचित रहने के बाद भी कवि का एहसास सभी भावणाओं को व्यक्त करने में सफल रह है। जैसे कि -

"माथे का जो कलंक था दुनिया की नज़र में
माँ की नज़र में मेरा डिठौना बना रहा।" [8]

इसप्रकार कवि का बचपन से लेकर जीवन पारिवारिक सुख से वंचित रहा। घर के हालात खराब होने के कारण उन्हें यह सबकुछ सहना पड़ा। कवि जीवन का सत्य बताते हैं कि -

"हर किसी शख़्स की क़िस्मत का यही है क़िस्सा,
आए राजा की तरह, जाए वो निर्धन की तरह।" [9]

1.1.3 बचपन :-

बचपन की यादें दिल को सुकुन दिलाती हैं। हर कोई चाहता है कि बचपन के लम्हें दोबारा जिये जाएँ, मगर यह केवल हसीन ख्वाब बनकर रह जाता है। बचपन का रिश्ता खुशियों से रहता है, नटखटपन और शरारतों से रहता है, साथ ही चिंता मुक्त जीवन से रहता है। यही कारण है कि, प्रत्येक व्यक्ति अपने बचपन को हमेशा याद करता है और चन लम्हें खुशियों के महसुस करने की कोशिश करता है।

मगर गोपालदास सक्सेना का बचपन इससे काफी भिन्न है। छह साल की उमर में पिता का छत्र सर से छिन गया। घर के हालात अच्छे न होने के कारण फूफा श्री. हरदयाल प्रसाद के पास एटा जाना पड़ा। वहीं पर ग्यारह वर्ष तक रहना पड़ा और शिक्षा प्राप्त करनी पड़ी। उन दिनों के बारे में डॉ. दुर्गा शंकर मिश्रजी ने लिखा है -

"सच तो यह है कि बालक या गोपाल या नीरज के लिए 'बुआ और फूफा के घर का जीवन फूलों और काँटों की मिली जुली यादगारें हैं, जिनमें कुछ में बहुत रंग, बहुत ही सुगंध है, पर कुछ की कसक गुलाब की गंध के साथ बराबर याद आती रहती है।" [10]

नीरज जी ने अपना बचपन किस प्रकार महसुस किया, यह उनकी ग़ज़ल का एक शेर देखने पर हमारी समझ में आ जाता है -

"सारी महफ़िल सुनकर जिसको झूम-झूमकर मस्त हुई
वो तो गीत नहीं था मेरा, आँसू का इक क़तरा था।" [11]

अगर ग़ज़ल का एक शेर हमारे दिल को छायल कर देता है, तो यह सोचना जरूरी हो जाता है कि, उस समय के हालात नीरज जी के हृदय पर किस प्रकार आघात कर चुके होंगे। 1942 में एटा से हाईस्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में

उत्तीर्ण होने के पश्चात हालात के सामने विवश होकर नौकरी करनी पड़ी। माताजी के आग्रह के कारण रंगरूटों में नौकरी नहीं की। मगर इटावा की कचहरी में टाइपिंग का काम प्रारंभ किया।

"अब के सावन में शरारत ये मेरे साथ हुई,
मेरा घर छोड़ के' कुल शहर में बरसात हुई।" [12]

गोपालदास ने अधिक लाभ की आशा न करते हुए यह काम आरंभ किया मगर कुछ ही दिनों में यह काम भी बन्द हो गया। अब किया मगर कुछ ही दिनों में यह काम भी बन्द हो गया। अब मजबूर होकर उन्हें कुछ दिनों के लिए ही सही पर सिनेमाघर की एक दुकानपर पान - बीड़ी - सिगरेट बेचने का काम करना पड़ा। यह काम करना याने बदनामी को गले से लगाने के बराबर था, मगर कवि ने इस हालात पर एक ग़ज़ल लिखी है -

"जो कलंकित कभी नहीं होते
वो तो वन्दित कभी नहीं होते।
जिनको घायल किया न काँटों ने
वो सुगन्धित कभी नहीं होते।
लोग करते न गर हमें बदनाम
हम तो चर्चित कभी नहीं होते।" [13]

इसप्रकार नीरज जी का बचपन काफी निराशाजनक रहा। जिम्मेदारी ने उन्हें कम उमर में ही युवा रूप प्रदान किया था। अगर संघर्ष का नाम ही जीवन है, तो फिर कवि का जीवन बचपन से ही आरंभ हुआ था। मगर 'ना किसी से शिकायत, ना किसी पे गुस्सा' इसप्रकार वे अपना बचपन जिते गये और हमें भी कुछ सिख प्रदान करते गए।

1.1.4 पालन - पोषण :-

कवि नीरज जी का पालन - पोषण किस प्रकार हुआ, इसको दो विभागों में विभाजीत किया जायेगा। जब तक उनके पिता जिवित थे, तब तक का पालन - पोषण काफी सुखकर रहा है। गोपालदास के प्रति पिता को अधिक प्रेम था। इसकारण पुत्र को वे हमेशा खुश रखते थे। माता के प्यार-दुल्हार से बेटा खुशी महसुस करता था। अपने भाइयों के साथ खेलना भी उसे भाता था। नौकरी के कारण घर - गृहस्थी भी ठिक - ठाक चल रही थी। पिता को आराम-तलक जीवन पसंद होने के कारण घर का वातावरण, माहौल उसी प्रकार का था। अतः गोपालदास के पालन - पोषण का सवाल ही खड़ा नही होता था।

मगर पिता की मृत्यु के पश्चात घर के हालात बदल गए, जिना दुशवार हो गया। तब पढ़ाई के लिए नीरज जी को फूफा की थी। कोई कितना भी प्यार क्यों न करे, आखिर अपना घर अपना होता है और पराया घर पराया। थोड़ा अपनापन आ जाता है, तो थोड़ी सी कड़वाहट भी बनी रहती है। तथा छोटी उमर में समझ न

होने के कारण अच्छाई कम और बुराइयाँ अधिक दिखाई देती हैं। फूफा ने अच्छी तरह से पालन - पोषण किया ऐसा कहने में ही समझदारी है, क्योंकि नीरज जी पर उनके काफी एहसान हैं, उनका बदला हम बदनामी के साथ नहीं चुका सकते। फिर भी बालक के विचार कुछ इस प्रकार बने रहे -

"हर शख्स उनकी आँख में सोना बना रहा
मैं ही था इक जो सिर्फ़ खिलौना बना रहा।
बढ़ता रोज़ जिस्म मगर घट रही थी उम्र
'होने' के साथ-साथ 'न होना' बना रहा।" [14]

लेकिन फूफा द्वारा नीरज जी का पालन - पोषण अच्छी तरह से किया गया। इसीकारण उनमें अच्छे संस्कार पाये जाते हैं। हम जानते हैं कि बचपन में लगी आदतें जीवन पर्यंत रहती हैं। और नीरज जी का बचपन एटा में ही गया। अतः अच्छे संस्कार और अच्छे पालन - पोषण का श्रेय फूफा को ही जाता है।

1.1.5 शिक्षा :-

पिता का छत्र सर से चला गया, तब नीरज जी की उमर थी छह साल। अब स्कूली जीवन का सपना भी भंग होता नजर आ रहा था, कि फूफा हरदयाल प्रसाद ने नीरज को एटा बुलाया और शिक्षा का जिम्मा अपने उपर लिया। परिवार से दूर रहने का दुःख अपने दिल में दबाकर गोपालदास ने जी - तोड़ मेहनत की और 1942 में एटा से हाईस्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। घर के खराब हालात और माताजी तथा भाइयों की जिम्मेदारी के कारणवश उन्हें अपना अध्ययन बन्द करके छोटे - बड़े कामों में ध्यान बटाना पड़ा।

स्विटजरलैंड की एक विदेशी कंपनी 'वाल्कर्ट ब्रदर्स' में 'स्टेनो टाइपिस्ट' का काम करते हुए सन 1949 में नीरज जी ने इंटर मीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की। फिर पार्ट टाईम नौकरी करते हुए सन 1951 में बी. ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। एक वर्ष तक कानपुर में जिला सूचना अधिकारी के रूप में कार्य किया। कुछ परेशानियों के कारण नौकरी से त्यागपत्र दिया और 1953 में डी. ए. वी. कॉलेज से हिन्दी साहित्य विषय में प्रथम श्रेणी में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण हुए। जब नीरज जी 12 - 14 साल के थे, तब उन्होंने गांधी - जिन्ना मीटिंगपर एक कविता लिखी थी, उसे सुनकर उर्दू के मशहूर शायर हफीज जालधरी जी प्रभावित हुए और उन्होंने नीरज जी को अपने कार्यालय में 'लिटररी असिस्टंट' की नौकरी दी। युद्ध का प्रचार करने के लिए उन्हें 120 रूपये तनखा मिलती थी। मगर यह कार्य उन्हें उचित नहीं लगा और उन्होंने सरकार की जगह कॉंग्रेस और राष्ट्रीयता का प्रचार किया। इससे उनकी नौकरी गई और दिल्ली से उन्हें कानपुर लौटना पड़ा।

डी. ए. वी. कॉलेज, कानपूर में 1946 में उन्हें क्लर्क की नौकरी मिल गई। इसी कॉलेज से उन्होंने 1953 में एम. ए. उत्तीर्ण किया और जीवन का सफर तय करते हुए, कई जगहों पर नौकरी करते हुए वे अंत में 1956 में अलीगढ पहूँचे। 'धर्मसमाज कॉलेज, अलीगढ़' में उन्हें प्राध्यापक के रूप में नौकरी मिल गई। यह

नौकरी उनका जीवन स्थायी बनाने में सफल साबित हुई। यहीं पर उन्होंने गीत लिखनें आरंभ किए। जो गीत आज उनकी पहचान बन गए हैं।

इसतरह नीरज जी की शिक्षा का सफर काफी कठीन रहा है। परिस्थितियों से जुझते हुए उन्होंने शिक्षा प्राप्त की है, जो उनका जीवन सँवारने में सहयोग देती रही।

शिक्षा का अर्थ केवल यही नहीं कि, स्कूल में जाकर किसी कक्षा में पास हो जाना। बल्कि नैतिक मूल्यों को सँभालना, संस्कार - संस्कृति का पालन करना, बड़ों को आदर देना, राष्ट्रप्रेम आदि बातें भी शिक्षा में ही आ जाती है। इसके बारे में नीरज जी के विचार हैं -

"क्या अजब दौर है दुनिया का आजकल लोगो।
मिट्टी तो महँगी है इन्सान मगर सस्ते हैं।" [15]

यहाँपर कवि ने इन्सानियत के पतन पर प्रकाश डाला है और दुनिया में इन्सानियत सबसे बड़ी चीन है, यह बताने का प्रयास किया है। साथ ही इन्सानियत को सँभालकर रखने का जिम्मा आम-आदमी और समाज को दिया है। एक और ग़ज़ल में नीरज जी ने कहा है कि -

"दिलों को तोड़ के मन्दिर जो बनाकर लौटे
उन्हें बताओ कि वह क्या गुनाह कर आये।" [16]

इस ग़ज़ल के द्वारा कवि ने हिन्दू - मुस्लिम झगड़े पर प्रकाश डाला है। कवि कहता है कि, हिन्दोस्तान में न हिन्दू धर्म हो, न ईस्लाम धर्म हो, केवल इन्सानियत ही धर्म हो। जिससे आपस में प्रेम बढ़े और सभी झगड़े समाप्त हो जाएँ। आजकल कुछ लोग अपने स्वार्थ के लिए धर्म का इस्तेमाल करते हैं, और हम उनके जाल में फंस जाते है। हमें आपस में लडाकर वे अपना फायदा देखते हैं। अतः उनसे दूर रहना होगा। इसीसे हमारा देश विकास की ओर बढ़ेगा।

इसप्रकार कवि नीरज जी ने अपने जीवन में कई महत्वपूर्ण बातों को पहचाना और शिक्षा के रूप में उन्हें आत्मसात किया। इन्हीं बातोंपर उन्होंने ग़ज़लों का निर्माण किया, जो आम - आदमी के हृदय को झकझोर देती हैं। इस तरह नीरज जी के जीवन में शिक्षा का महत्व अनन्य साधारण रहा है।

1.1.6 यौवन और विवाह :-

यौवन उस पंछी की तरह होता है, जिसके अभी - अभी पर निकल आये हों। उसकी सोच बड़ी और समझ छोटी होती है। हर कार्य करने की चाह और उत्साह रहता है। किसी भी नई बात या वस्तु के प्रति अधिक आकर्षण रहता है। इन्सान अपने आपे के बाहर रहता है। जिस्म और जान दोनों की अलग - अलग भाषा रहती है। इन्सान आजाद रहना पसंद करता है। किसी प्रकार की रोक-टोक वह सह नहीं पाता। इस हालात को यौवन का नाम दिया जाता है। यह उमर बेलगाम घोडे की तरह होती है, जिसकी हमेशा चिंता लगी रहती है। कवि ने अपने

यौवन का वर्णन एक नाम के साथ किया है।

नीलिमा नामक लड़की से उनका पत्र व्यवहार चलता था। पत्र के साथ - साथ दोनों के विचार और शायद दिल भी जुड गये थे। इसका वर्णन उन्होंने 'हिन्दी के प्रसिद्ध गीतकार : नीरज' किताब में किया है। जिंदगी के हर हालात दोनों ने एक - दूसरे के साथ बाँट लिए थे। सामाजिक विषयों पर भी उनमें चर्चा होती रहती थी। नीलिमा नीरज जी के लिए प्रेरणा बन गई थी। एक बार दोनों मिलें भी थे। नीलिमा ने अपने प्रेम का इजहार भी किया था, मगर नीरज जी से कोई संकेत न मिलनेपर वह दुनिया की भीड़ में कुछ इस तरह से खो गई, कि फिर कभी नज़र नहीं आयी। नीरज जी को उससे बिछडने का दुःख हमेशा सताता रहा है, जिसे उन्होंने ग़ज़ल में व्यक्त किया है -

"... कि दूर-दूर तलक एक भी दरख़्त न था,
तुम्हारे घर का सफ़र पहले इतना सख़्त न था।
हम इतने लीन थे तैयारियों में जाने की
वो सामने थे, उन्हें देखने का वक़्त न था।" [17]

नीलिमा के साथ हुई बातें, पत्रव्यवहार को नीरज जी ने अपनी भाषा में लिखकर प्रकाशित भी किया है। शायद इसे ही यौवन कहा जाता है।

"प्यार भी आपको हो जायेगा रफ़्ता रफ़्ता
दिल नहीं मिलता तो नज़रें ही मिलाते रहिये।" [18]

कवि नीरज जी का विवाह श्रीमती सावित्रीदेवी से 1946 में हुआ। इसके बारे में डॉ. दुर्गा शंकर मिश्रजी ने बताया है कि - "दिल्ली की नौकरी से मुक्ति प्राप्त होने पर नीरज सन 1946 में कानपुर चले गये और पहले वे कानपुर के बहुत ही प्रसिध्द मुहल्ले कुरसवाँ में रहते थे पर बाद में नेहरू नगर में रहने लगे। नीरज कुछ दिनों तक कानपूर के डी. ए. वी. कालेज के कार्यालय में क्लर्क रहे और इसी बीच उनका विवाह श्रीमती सावित्री देवी से हो गया। कुछ समय बाद अपने एक मित्र श्री माया प्रकाश निगम के प्रयत्नों से नीरज को स्विटजरलैंड की एक विदेशी कम्पनी 'वाल्कर्ट ब्रदर्स' के कानपूर कार्यालय में 'स्टेनो टाइपिस्ट' की नौकरी मिल गयी इस कम्पनी में नीरज ने लगभग पाँच वर्षों तक काम किया और अब उनके जीवन में कुछ स्थायित्व भी आया तथा उन्होंने अपने अध्ययन की श्रृंखला को भी आगे बढ़ाया।" [19]

इसप्रकार नीरज जी का वैवाहिक जीवन आरंभ हुआ। पत्नी की भावनाओं को उन्होंने इसप्रकार से अपनी ग़ज़ल में चित्रित किया है -

"ज़िक्र जिस दम भी छिड़ा उनकी गली में मेरा
जाने शरमाए वो क्यों गाँव की दुलहन की तरह" [20]

इस ग़ज़ल में नीरज जी ने पत्नी के शरमाते के पिछे छिपी लज्जा भावना का चित्रण किया है। यह सामान्य बात है कि, नई दुल्हन पति का जिक्र होने पर

शरमाती है। मगर अपनी पत्नी के प्रति होने वाली प्रेम भावना के कारण नीरज जी को यह शरमाना भी कुछ अलग ही जान पडता है। अपने अस्तित्व का चित्रण करते हुए कवि आगे कहते हैं कि

"कहानी बनके जिये हम तो इस जमाने में
लगेंगी आपको सदियाँ हमें भुलाने में।" [21]

पति - पत्नी के अटूट रिश्ते को उजागर करते हुए कवि ने इस बंधन को जन्म - जन्मांतर का साथ बताया है। जो कभी भी छुटता नहीं। इसप्रकार कवि ने विवाह और यौवन का वर्णन किया है।

1.1.7 नौकरियाँ :-

नीरज जी के जीवन का असली संघर्ष 1942 से शुरू होता है। क्योंकि इस साल उन्होंने एटा से हाईस्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की लेकिन घर के हालात खराब होने के कारण उन्हें अपनी पढ़ाई रोक कर नौकरी के पीछे भागना पड़ा। इत्तेफाक से नौकरी न मिलने पर उन्होंने सेना में भरती होने का फैसला किया, मगर माताजी के आग्रह के कारण उन्हें अपना फैसला बदलना पड़ा। पैसों की जरूरत के कारण इटावा की कचहरी में टाइपिंग का काम शुरू किया परंतु यह भी अधिक दिनों तक चल न सका। अतः एक सिनेमाघर में पान - बिड़ी - सिगरेट बेचने के लिए उन्हें मजबूर होना पड़ा।

नौकरी की खोज में नवम्बर 1942 में दिल्ली जाकर भारत सरकार के सप्लाई विभाग में टाईपिस्ट की नौकरी की। दो वर्ष तक 67 रूपये मासिक पर काम करते रहे। नीरज जी की 'गांधी जिन्ना मीटींग' पर लिखी कविता सुनकर उर्दू के मशहूर शायर श्री हफीज जालन्धरी प्रभावित हुए और 'सांग्स पब्लिसिटी आफिस' में एक सौ बीस रूपये माह वेतन पर 'लिटरेरी असिस्टेंट' की नौकरी दी। उनका काम था युद्ध का प्रचार करना। अंग्रेज सरकार का प्रचार करना उनके दिल को रास न आया और उन्होंने काँग्रेस और राष्ट्रभक्ति का प्रचार किया। जिसके कारण उन्हें अपनी नौकरी से हात धोना पड़ा।

डी. ए. वी. कॉलेज कानपुर में 1946 में क्लर्क के रूप में काम किया। इन्हीं दिनों श्रीमती सावित्री देवी से उनका विवाह हुआ। उनके मित्र श्री. माया प्रकाश निगम ने 'वाल्कर्ट ब्रदर्स' के कानपुर कार्यालय में उन्हें 'स्टेनो टाइपिस्ट' की नौकरी दिलवा दी। यहाँ तकरीबन पाँच वर्षो तक उन्होंने नौकरी की।

1951 में कानपूर के जिला सूचना अधिकारी बने। यहाँपर एक वर्षतक उन्होंने कार्य किया। लेकिन सरकारी नौकरी में आनेवाले कटु अनुभवों के कारण उन्होंने त्यागपत्र दे दिया।

डॉ. दुर्गा शंकर मिश्रजी ने बताया है कि, "नीरज ने सन् 1953 में कानपुर के डी. ए. वी. कॉलेज से हिन्दी साहित्य विषय में एम. ए. की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की परन्तु प्रथम श्रेणी आने पर डी. ए. वी. कॉलेज के प्राध्यापक की नौकरी देने का वचन देने के बावजूद उन्हें नियुक्त नहीं किया गया क्योंकि

BARR. B... KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

प्रिंसिपल का कहना था - You are too popular among students specially among girls. "[22]

1955 में नीरज जी मेरठ कॉलेज के प्राध्यापक बने। मगर वहाँ के अधिकारीयों को नीरज जी का वहाँ रहना रास न आया और उन्होंने कवि को परेशान करना आरंभ किया। इससे तंग आकर नीरज जी ने नौकरी छोड़ दी।

अंत में 1956 को अलीगढ़ के धर्म समाज कॉलेज में हिन्दी प्राध्यापक के रूप में कार्य करने लगे। यह नौकरी उन्हें परेशानियों के बादलों से बाहर निकालने में सफल रही। यहींपर अपना घर बनाकर नीरज जी सपरिवार रहने लगे। यहीं से उन्हे साहित्य जगत में बहुत अधिक लोकप्रियता मिली और उन्होंने गीत लिखना आरंभ किया।

नीरज जी ने अपनी ग़ज़लों में नौकरियाँ ढुंढते समय आनेवाली परेशानियों का चित्रण किया है। उन्होंने कहा है कि -

"हर शख़्स उनकी आँख में सोना बना रहा
मैं ही था इक जो सिर्फ़ खिलौना बना रहा।"[23]

नौकरी देते समय कई बार उन्होंने यह अनुभव किया कि, उन्हें नौकरी नौकरी देते समय लोग हिचकिचाते थे और अन्य व्यक्ति को वही नौकरी आसानी से दे देते थे।

"बदन प' जिसके शराफ़त का पैरहन देखा
वो आदमी भी यहाँ हमने बदचलन देखा।
ज़ुबाँ है और, बयाँ और, उसका मतलब और
अजीब आज की दुनिया का व्याकरण देखा।"[24]

यहाँपर नीरज जी ने समाज के फरेब पर प्रकाश डाला है और 'जैसा दिखता है वैसा होता नहीं' इस बात को साबित करके दिखाया है। आज के लोग वादा कर के उसे तोडने में माहिर हो गये हैं, जिसके कारण इन्सान का एक-दूसरे पर विश्वास नहीं रहा। इन्हीं हालात से गुजरकर अंत में उन्हें नौकरी में स्थायित्व मिला है। इसके कारण समाज की हर नब्ज को वे भली-भाँति जानते हैं। फिर भी उन्हें समाज से ना कोई गिला है, ना कोई शिकवा।

इसतरह से कवि नीरज जी के जीवन में नौकरी का दौर काफी संघर्षमय रहा है। इन्हीं दिनों उन्हें लोगों की सही पहचान हो गई। फिर भी दिल के सच्चे होने के कारण उन्हें किसी से कोई शिकायत नहीं है।

1.1.8 व्यक्तित्व :-

कवि नीरज जी का व्यक्तित्व इस प्रकार का है कि देखनेवाला उन्हें देखता ही रह जाता है। और उन्हें जानने की कोशिश करता है। इस प्रभाव के कारण उनकी कविताओं और ग़ज़लों का जादू और भी बढ़ जाता है। औरों के काव्य को

सुनकर झूमनेवाले श्रोता नीरज जी के काव्यसागर में डूब जाते हैं। उनकी भावनाओं को महसूस करने लगते हैं। यह सब उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का प्रभाव है।

"घुंघराले बाल, भव्य ललाट, दीर्घ नासिका, ऊँचा पूरा शरीर, विशाल नेत्र, गेहुँआ रंग, रसीलें ओंठ और खद्दरका श्वेता कुरता तथा पाजामा।" [25]

यह वर्णन पढ़ने के साथ ही 'हिन्दी के प्रसिद्ध गीतकार नीरज' किताब का मुखपृष्ठ देखा और 'नीरज की पाती' का अंतिम पृष्ठ देखा। दोनों तसविरों को देखने पर वर्णन हुबहु जान पड़ा। अतः मै भी कवि नीरज जी के व्यक्तित्व से प्रभावित हो गया हूँ। साथ ही उनकी कविता वेबसाईटपर सुनने के कारण उनकी भाषा और प्रस्तुतिकरण का भी दिवाना हो गया हूँ। उनके व्यक्तित्व में शामिल कुछ गुणों का वर्णन इस प्रकार दिया जाएगा -

1.1.8.1 निर्भयता :-

अन्याय, अत्याचार सहना कवि नीरज जी के बस में नहीं है। चाहे वह उनपर किया जाय या फिर समाज के किसी भी आम आदमीपर। अन्याय का मुँह तोड जवाब देना नीरज जी की आदत है। उन्होंने जीवन में इतनी तकलिफों को सहा है कि, दूसरों की पीड़ा वे महसूस कर स्वभाव बन चुका है। आजकल समाज में झूठ-मक्कारी बढ़ गई है। शराफत के नामपर लोगों को फसाया और लुटा जा रहा है। उनका वर्णन कवि ने अपनी ग़ज़लों में किया है।

"बदन प' जिसके शराफ़त का पैरहन देखा
वो आदमी भी यहाँ हमने बदचलन देखा।
जुबाँ है और, बयाँ और, उसका मतलब और
अजीब आज की दुनिया का व्याकरण देखा।
लुटेरे डाकू भी अपने प' नाज़ करने लगे
उन्होंने आज जो संतों का आचरण देखा।" [26]

प्रस्तुत ग़ज़ल में कवि ने आज के साधुओं पर कड़ा प्रहार किया है, जो धर्म और भक्ति के नामपर लोगों को लुटने का कार्य कर रहे हैं। साथ ही बदचलन और झूठे-मक्कार लोगों का आचरण भी हमारे सम्मुख रखा है, ताकि हम धोखा न खा बैठे।

"ज्यों लुट लें कहार ही दुलहिन की पालकी
हालत यही है आजकल हिन्दोस्तान की।" [27]

कवि ने प्रस्तुत ग़ज़ल में निर्भयतापूर्वक देश की हालत का वर्णन किया है। आज देश के हालात इसप्रकार हैं कि, रक्षक ही भक्षक बन गये है, ऐसे में देश का भविष्य खतरे में आ गया है।

1.1.8.2 साहस :-

किसी भी विषय को लेकर जब साहस के साथ लिखने की बात आती है, तो नीरज जी का नाम सामने आ जाता है। सामाजिक राजनीतिक और धार्मिक विषयों पर मर्मभरी बातें कहना, उनकी खासियत रही है। सत्य बातों पर विचार प्रकट करनें से नीरज जी को कोई भी नहीं रोक सकता। इंदिरा गांधीजी ने जब अपने अधिकारों का गलत प्रयोग किया, तब नीरज जी की कलम ने उन्हें झकझोर के रख दिया था। आज जनतन्त्र के नाम पर लोगों का शोषण हो रहा है। इसपर कवि ने लिखा है कि -

"बात अब करते हैं क़तरे भी समन्दर की तरह।
लोग ईमान बदलते हैं कलेण्डर की तरह।
ना कोई राह, न मंज़िल, न कोई मक़सद है
है ये जनतन्त्र यतीमों के मुक़द्दर की तरह।" [28]

प्रस्तुत ग़ज़ल में कवि ने उन लोगों का चित्रण किया है, जो अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी कर सकते हैं, ईमान बेच सकते हैं और देश का अस्तित्व भी मिटा सकते हैं।

"चाँद को छूके चले आये हैं विज्ञान के पंख
देखना ये है कि इंसान कहाँ तक पहुँचे।" [29]

कवि ने बताया है कि हम विज्ञान के साथ आगे बढ़ रहे हैं। यह मानव के विकास के लिए आवश्यक है। परंतु कहीं ऐसा न हो कि, विज्ञान के साथ चलते - चलते हम इन्सान और इन्सानियत को भूल जाएँ। संस्कार और संस्कृति को समाप्त कर दें। अतः विज्ञान और इन्सान दोनों को साथ में चलना चाहिए।

1.1.8.3 आत्मविश्वास :-

जिस व्यक्ति के जीवन का आरंभ संघर्ष के साथ हुआ हो, जिसने हालात और समाज दोनों का सामना किया हो और जो अंत में सफल हुआ हो, उसके आत्मविश्वास का दूसरा नाम है। अपने बूरे दिनों को याद रखकर समाज की सेवा करना जिन्होंने अपना धर्म माना और आम आदमी की पीड़ा को वाणी देने का कार्य किया, उनके कृतित्व में और व्यक्तित्व में आत्मविश्वास की झलक का मिलना स्वाभाविक है।

अपनी काव्य-प्रतिभा के बलबुतेपर उन्होंने जो मुकाम हासिल किया, उसे देखकर जलनेवालों की संख्या भी कम नहीं है। उन लोगों ने नीरज जी को बदनाम करने का भी प्रयत्न किया मगर नीरज जी ने उनकी शरारतों को अनदेखा करके छोड़ दिया। अपने इस अनुभव को कवि ने ग़ज़ल में बयान किया है -

"जो कलंकित कभी नहीं होते
वो तो वन्दित कभी नहीं होते।
जिनको घायल किया न काँटों ने
वो सुगन्धित कभी नहीं होते।
लोग करते न गर हमें बदनाम
हम तो चर्चित कभी नहीं होते।" [30]

इसप्रकार अपने आत्मविश्वास के आधारपर कामयाबी को हासिल करनेवाले नीरज जी लोगों की गलतियों को माफ करने में भी सबसे आगे हैं। उन्होंने अपने आत्मविश्वास को दूसरों की राह बनाने का कार्य किया है। उनका मानना है कि -

"हारे हुए परिन्द ज़रा उड़के देख तो
आ जायेगी ज़मीन पे' छत आसमान की।" [31]

प्रस्तुत ग़ज़ल में कवि ने जीवन में कभी हार न मानने का संदेश दिया है और लोगों के आत्मविश्वास में वृद्धि लाने का कार्य किया है।

1.1.8.4 भावुक :-

मानव समाज में रहता है। एक - दूसरे के प्रति होनेवाली उनकी भावनाएँ या लगाव ही इन्सानियत है। इन्सानियत को हम भावुकता भी कह सकते हैं। दूसरों के दुःख को देखकर दुःखी होना और सुख को देखकर सुखी, यह मानव की पहचान है। कवि नीरज जी की ग़ज़लों में भी भावुकता दिखाई देती है। इसके कारण अधिकतर लोग प्रभावित हो जाते हैं। अपने अस्तित्व को ग़ज़ल में पाकर उसके साथ तल्लिन हो जाते हैं। यह सब भावुकता का असर है। कवि की इस ग़ज़ल को देखकर भावुकता का आशय समझ में आता है -

"समय ने जब भी अँधेरों से दोस्ती की है,
जलाके अपना ही घर, हमने रोशनी की है !
सुबूत हैं मेरे घर में धुएँ के ये धब्बे,
कभी यहाँ प' उजालों ने ख़ुदकुशी की है !
कभी भी वक़्त ने उनको नहीं मुआफ़ किया,
जिन्होंने दुखियों के अश्कों से दिल्लगी कह है !" [32]

यह ग़ज़ल नरम दिल नीरज दिल नीरज जी की सामाजिक भावनाओं को प्रकट करती है। और इन्सानियत का प्रचार करती है।

"जो जुल्म सह के भी चुप रह गया, न खौल उठा
वो और कुछ हो मगर आदमी का रक्त न था।" [33]

प्रस्तुत ग़ज़ल में कवि ने अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने का संदेश दिया है। साथ ही आदमी की पहचान साहस में छिपी है, अगर साहस न हो तो उसे

आदमी कहना उचित न होगा, यह विचार भी प्रकट किया है। यहाँ पर भावुकता का उग्र रूप सामने आ जाता है।

1.1.8.5 विश्वशांति की चाह :-

कवि नीरज जी शांत स्वभाव के होने के कारण शांति का महत्व जानते हैं। इसी कारण विश्व में शांति बनाये रखने का सपना वे देखते हैं। हर बात को, झगड़े को समझदारी से हल करना चाहिए और दंगे - फसाद को जड़ से समाप्त करना चाहिए, यह उनका विचार है। अतः अपने विचारों को उन्होंने ग़ज़ल में व्यक्त किया है।

"अब तो मज़हब कोई ऐसा भी चलाया जाये
जिसमें इन्सान को इन्सान बनाया जाये।
जिसकी ख़ुशबू से महक जाये पड़ोसी का भी घर
फूल इस क़िस्म का हर सिम्त खिलाया जाये।
मेरे दुख - दर्द का तुझ पर हो असर कुछ ऐसा
मैं रहूँ भूखा तो तुझसे भी न खाया जाये।
जिस्म दो होके भी दिल एक हों अपने ऐसे
मेरा आँसू तेरी पलकों से उठाया जाये।" [34]

प्रस्तुत ग़ज़ल में कवि ने दंगे - फसाद, मजहबी झगडों का विरोध किया है तथा शांति और अमन की कामना की है। प्यार के बदले प्यार देकर झगडे को समाप्त करने की सलाह दी है। हर एक व्यक्ति दिल से दूसरों का हित सोचे, यही आशा की है।

"घृणा का प्रेम से जिस दिन अलंकरण होगा
धरा प' स्वर्ग का उस रोज़ अवतरण होगा।" [35]

इस ग़ज़ल में कवि ने बताया है कि, शांति और प्रेम से जिस दिन घृणा को समाप्त कर दिया जाएगा, उस दिन यह धरती स्वर्ग के समान सुंदर बन जाएगी।

1.1.8.6 एकता का संदेश :-

हिंदू - मुस्लिम झगडों के कारण देश में अशांति फैली थी। आम - आदमी का जिना मुश्किल हो गया था। ऐसे समय में कवि नीरज जी ने अपनी ग़ज़लों के द्वारा भाईचारा बढाने का कार्य किया है और हिंदु - मुस्लिम एकता का प्रचार किया है। साथ ही, यह बात बतायी है कि दुनिया में एक ही धर्म है, जिसका नाम है - इन्सानियत।

"अब तो इक ऐसा वरक़ मेरा - तेरा ईमान हो
इक तरफ़ गीता हो जिसमें इक तरफ़ क़ुरआन हो।
काश ऐसी भी मोहब्बत हो कभी इस देश में
मेरे घर उपवास हो जब तेरे घर रमज़ान हो।
मज़हबी झगड़े ये अपने आप सब मिट जायेंगे
और कुछ होकर न गर इन्सान बस इन्सान हो।" [36]

प्रस्तुत ग़ज़ल में हिन्दु - मुस्लिम एकता का संदेश मिलता है। और दुनिया में सबसे बढ़कर एक ही धर्म है - इन्सानियत का धर्म, यह बात पता चलती है।

1.1.8.7 जीवन में हार न मानना :-

कवि नीरज जी के जीवन में पहले बचपन आया या संघर्ष यह बताना कठिन है। जीवनभर संघर्ष करने के कारण वे किसी भी कठिनाई के आगे हार मानने के लिए तैयार नहीं है। समस्याओं को हल करके, कठिनाईयों पर विजय पाके आगे बढ़ना उनका स्वभाव बन चुका है। अतः लोगों को प्रेरणा देने का कार्य भी उन्होंने ग़ज़लों के द्वारा किया है।

"हारे हुए परिन्द ज़रा उड़के देख तो
आ जायेगी ज़मीन पे' छत आसमान की।" [37]

प्रस्तुत ग़ज़ल से कवि ने हमेशा प्रयत्न करने की सलाह दी है क्योंकि कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।

1.1.9 कृतित्व :-

हजारो श्रोताओं के आँखों के तारे, लाखों पाठकों के दिलों की धडकन और सकारात्मक दृष्टिकोण के आधारस्तंभ है - कवि नीरज जी। बचपन से लेकर अंत तक संघर्षमय जीवन जीकर आत्मविश्वास को अपना कवच बनानेवाले नीरज जी हृदयस्पर्षी ग़ज़लों का निर्माण करने से उनके चाहनेवालों की संख्या में वृद्‌धि हुई है। आशावादी रचनाओं का निर्माण करने से वे समाज प्रेरणा स्त्रोत माने जाते हैं।

वर्तमान समाज का चित्रण करना, अन्याय का प्रतिकार करना, आम आदमी के दुःख - दर्द व्यक्त करना, लोगों को प्रेरणा देना आदि नीरज जी के ग़ज़लों के प्रमुख उद्‌देश्य हैं। उनके कृतित्व में अब तक के कार्य का लेखा - जोखा आता है। नीरज जी ने अपनी ग़ज़लों में निम्न विषयों को प्रस्तुत किया है -

1.1.9.1 सामाजिक चेतना :-

समाज को बुराईयों से बचाना आवश्यक है। कवि नीरज जी ने समाज में छिपी बुराइयोंपर कड़ा व्यंग कसा है। साथ ही समाज को सही रास्ता दिखाने का प्रयास किया है। आजकल समाज में भ्रष्टाचार, मारपीट, संस्कारहिनता, धोखाधाडी

जैसी समस्याएँ पनप रही हैं, उनको दृष्टिगोचर करना ही कवि को सामाजिक चेतना का आभास दिलाता है। अब तक विश्व में जितनी भी वैचारिक क्रांतियाँ हुई हैं, उनका प्रमुख कारण सामाजिक चेतना ही रहा है।
कवि नीरज जी ने अपनी ग़ज़ल में बताया है कि -

"जागते रहिए ज़माने को जगाते रहिये
मेरी आवाज़ में आवाज़ मिलाते रहिये।
हगने कल रात जलाये थे जो चौपालों पर
उन अलावों की ज़रा राख हटाते रहिये।" [38]

1.1.9.2 बेकारी :-

नौकरियाँ कम और लोग अधिक, ऐसी स्थिति आज पायी जाती है। इससे बेरोजगार लोगों की संख्या बढ़ जाती है। इसी को हम बेकारी कहते है। नौकरी न मिलने के कारण इनके सामने पेट की भूख मिटाने की समस्या है, साथ ही रहने के लिए घर, पहनने के लिए कपड़ा और अन्य भी समस्याएँ हैं। इनका हल निकालने के लिए कई लोग गलत रास्तेपर चल पड़ते हैं। इसमें उनका कोई दोष नहीं है, दोष है हालात का।
कवि नीरज जी ने बेकारी के हालात का चित्रण किया है -

"निर्धन लागों की बस्ती में घर - घर कल ये चर्चा था
वो सबसे धनवान था जिसकी जेब में खोटा सिक्का था।
अपने शहर में उस दिन मैंने भूख का ये आलम देखा
दूध के बदले इक माँ के आँचल से ख़ून टपकता था।" [39]

1.1.9.3 मानवतावादी विचारधारा :-

इन्सान इन्सान के साथ इन्सानियत से पेश आए, इसीको मानवतावाद कहते हैं। और मानवतावाद के बारे में होनेवाले हमारे विचार ही मानवतावादी विचारधारा बन जाते हैं। मानवतावाद के बारे में डॉ. दुर्गा शंकर मिश्रजी के विचार इसप्रकार हैं - "सामान्यतया मानव गरिमा एवं महत्ता की घोषणा करनेवाली विचार सरणि को 'मानवतावाद' कहा जाता है और श्री वाल्टर लिपमान (Walter Lippmon) ने एक स्थानपर मानवतावाद का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए यही कहा है कि मानवता से अभिप्राय मनुष्य द्वारा इस धरतीपर मानव की बुध्दि, उसके विवेक एवं श्रम द्वारा उत्तम जीवन की खोज की इच्छा अथवा दृढ़ संकल्प से हैं।" [40]

"समय ने जब भी अँधेरों से दोस्ती की है,
जलाके अपना ही घर, हमने रोशनी की है।
सुबूत हैं मेरे घर में धुएँ के ये धब्बे,
कभी यहाँ प' उजालों ने ख़ुदकुशी की है।" [41]

1.1.9.4 धोखाधड़ी :-

अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को फँसाना, लूटना ही धोखाधाडी है। आज कल धोखाधाडी की मात्रा इतनी बढ़ चुकी है कि, अपना कौन है और पराया कौन ? यह बताना भी मुश्किल हो रहा है। जब अपने खून के रिश्ते ही धोखा देने लगे हैं, तो पराये लोगों से शिकायत करना गँवारा नहीं होता। आज ऐसी स्थिति आ गई है कि, जो दिखता है वो होता नहीं और जो होता है वो दिखता नहीं। इसीकारण ऊपरी सजावटपर मोहित होकर लोग फँस जाते हैं। कोई शराफत की आड में बूरा आचरण करता है, तो कोई देशभक्ति की आड में देशद्रोही बनता है। इसी का चित्रण कवि ने प्रस्तुत ग़ज़ल में किया है -

"बदन प' जिसके शराफत का पैरहन देखा
वो आदमी भी यहाँ हमने बदचलन देखा।
ज़ुबाँ है और, बयाँ और, उसका मतलब और
अजीब आज की दुनिया का व्याकरण देखा।" [42]

1.1.9.5 मृत्युदर्शन :-

जीवन नश्वर है, मृत्यू अटल है, फिर भी मानव जिने की इच्छा रखता है। संसार की मोहमाया में फँस जाता है। मृत्यु की सत्यता को स्विकार करना आवश्यक है क्योंकि वह एक निश्चित, अचल सत्य है। मृत्यूदर्शन को अब कवि के लफजों में ही देखना अधिक लाभदायक सिद्ध होगा।

"सफर ये साँस का अब ख़त्म होने वाला है
जो जागता था मुसाफिर वो सोनेवाला है।
हज़ारों लोग इधर से गुज़र गये फिर भी
ये सिलसिला न कभी ख़त्म होनेवाला है।" [43]

1.1.9.6 व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि :-

जीवन आरंभ होता है अपने लिए और ख़त्म भी होता है तो अपने ही लिए। अगर जीवन का सफर इसतरह से चलता है तो काव्य के विषय में भी अपना महत्व रखना चाहिए। इसीलिए व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि अपना अलग महत्त्व रखती है। इसके बारे में विद्वानों के विचार भी महत्वपूर्ण हैं - "कवि नीरज ने अपनी काव्य कृतियों में व्यक्ति की महन्ता का ही प्रतिपादन किया पर साथ ही साथ वैयक्तिक कविता या व्यक्तिवादी काव्यधारा की उक्त प्रवृत्तियों में से अधिकांश न्यूनाधिक रूप में नीरज के काव्य में अवश्य दृष्टिगोचर होती हैं। सत्य तो यह है कि, नीरज के काव्य का आरंभ वैयक्तिक जीवन की अनुभूतियों के प्रकाशन के साथ आरम्भ होता है और उनकी प्रथम कृति संघर्ष या नदी किनारे में ही प्रेम, विरह, आशा, निराशा, असंतोष एवं विद्रोह आदि की अभिव्यक्ति की कई भावपूर्ण एवं सरस चित्र दीख पड़ते हैं।" [44]

"हर शख्स उनकी आँख में सोना बना रहा
मैं ही था इक जो सिर्फ़ खिलौना बना रहा।
बढ़ता रोज़ जिस्म मगर घट रही थी उम्र
'होने' के साथ - साथ 'न होना' बना रहा।" [45]

1.1.9.7 राष्ट्रीय भावना :-

अपने राष्ट्र के प्रति होनेवाली जिम्मेदारी, प्यार, अपनापन जब दिलों - दिमागपर छा जाता है, तब उत्पन्न होनेवाली भावना या विचारश्रेणी को राष्ट्रीय भावना कहते हैं। राष्ट्रीय भावना के बारे में विद्वानों का मत इसप्रकार है - "गिलक्राइस्ट ने अपने Principle of Political Science नामक ग्रंथ में कहा है 'राष्ट्रीयता एक ऐसी आंतरिक भावना है जो उन लोगों में उत्पन्न होती है जो एक ही जाति और स्थान से सम्बन्ध रखते हों, जिनकी भाषा, धर्म, इतिहास एवं आचार विचार सामान्य हों और एक ही राजनैतिक आदर्श से संगठित हों।" [46]

"अब तो इक ऐसा वरक़ मेरा - तेरा ईमान हो
इक तरफ़ गीता हो जिसमें इक तरफ़ क़ुरआन हो।
काश ऐसी भी मोहब्बत हो कभी इस देश में
मेरे घर उपवास हो जब तेरे घर रमज़ान हो।
अपना ये हिन्दोस्ताँ होगा तभी हिन्दोस्ताँ
हाथ में हिन्दी उर्दू का कोई दीवान हो।" [47]

निष्कर्ष :-

कवि नीरज जी के जीवन का हर पल संघर्षमय रहा है। जिसकी शुरूआत बचपन में पिता के देहांत के साथ हुई। हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने तक फूफा के घर रहना और बाद में नौकरी की खोज में दर - दर की ठोकरें खाना उनका नसीब था। यही हालात जब उन्होंने कविता में चित्रित किए, तब उनका पूर्णजन्म हुआ 'नीरज' के रूप में।

संघर्षमय जीवन जीनेवाला और दर - दर की ठोकरे खानेवाला यही गोपालदास सक्सेना आगे चलकर 'नीरज' बन जायेगा, ऐसा किसी ने भी सोचा नहीं था। अपने दर्द को वाणी देने के लिए जिस काव्य का निर्माण किया, वही काव्य बाद में आम जनता के दर्द की पुकार बन गयी। जिसे हर पाठक और श्रोता ने अपनी पलकोंपर बिठा लिया।

नीरज जी ने अपनी ग़ज़लों में सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक विषयों पर प्रकाश डाला। उनकी ग़ज़लें प्रेमाभिव्यक्ति के लिए निर्मित न होकर सामाजिक चेतना, राष्ट्रीय भावना और आम जनता के हालात व्यक्त करने के लिए हैं। जिनमें दर्द और जरूरतों का लेखाजोखा देखने को मिलता है। इसीकारण नीरज जी को सहृदय निर्माता माना गया है।

संदर्भ सूची

1 गोपालदास सक्सेना 'नीरज' व्यक्तित्व और कृतित्व - शिवाजी विष्णु निकम - पृ.1 - पी.एच.डी. शोध - प्रबंध - मार्च 1984
2 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.107 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996
3 गोपालदास सक्सेना 'नीरज' व्यक्तित्व और कृतित्व - शिवाजी विष्णु निकम - पृ.1 - पी.एच.डी. शोध - प्रबंध - मार्च 1984
4 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.134 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996
5 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.137 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999
6 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.111 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996
7 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.127 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999
8 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.122 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996
9 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.116 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996
10 नीरज का काव्यः एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.10,11 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979
11 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.132 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999
12 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.109 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996
13 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.135 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999
14 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.121 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996
15 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.139 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999
16 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.135 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996
17 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.131 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996
18 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.129 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

19 नीरज का काव्यः एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.12 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979

20 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.115 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

21 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.143 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

22 नीरज का काव्यः एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.13 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979

23 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.121 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

24 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.120 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

25 गोपालदास सक्सेना 'नीरज' व्यक्तित्व और कृतित्व - शिवाजी विष्णु निकम - पी.एच.डी. शोध - प्रबंध - मार्च 1984

26 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.120 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

27 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.108 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

28 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.122 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

29 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.114 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

30 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.135 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

31 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.107 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

32 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.121 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

33 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.132 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

34 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.130 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

35 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.127 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

36 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.125 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

37 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.107 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

38 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.128 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

39 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.132 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

40 नीरज का काव्यः एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.196,197 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979

41 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.121 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

42 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.120 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

43 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.137,138 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

44 नीरज का काव्यः एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.169 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979

45 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.121,122 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

46 नीरज का काव्यः एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.189 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979

47 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.125 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999